vinetur

बास्क अनुसंधान केंद्र की अगुवाई में स्पेन-फ्रांस परीक्षण : अंगूर की ऐसी बेलें जो फफूंदनाशकों का इस्तेमाल 70% तक घटा सकती हैं

शोधकर्ता रोग प्रतिरोध, सूखा सहने की क्षमता और वाइन की गुणवत्ता जांचने के लिए अलग-अलग मिट्टी और जलवायु में नई व कम इस्तेमाल वाली अंगूर की बेलों की तुलना करेंगे

सोमवार, 23 नवंबर 2026



स्पेन के बास्क क्षेत्र स्थित प्रौद्योगिकी केंद्र Neiker ने सोमवार, 23 नवंबर को बताया कि वह फ्रांस के साथ एक नई सीमा-पार अनुसंधान परियोजना की अगुवाई कर रहा है। इसमें ऐसी अंगूर की किस्मों का परीक्षण किया जाएगा जो फफूंदजनित रोगों के प्रति प्रतिरोधी और सूखे को बेहतर ढंग से सहने में सक्षम हैं। यह पहल ऐसे समय हो रही है जब वाइन क्षेत्र बढ़ते तापमान, कम नियमित वर्षा और रोगों के बढ़ते दबाव का सामना कर रहे हैं।

TRANSFERES नाम की यह परियोजना स्पेन और फ्रांस के वाइन उत्पादक क्षेत्रों में नई और कम इस्तेमाल होने वाली अंगूर की किस्मों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करेगी। अध्ययन में कृषि संबंधी व्यवहार, पौधों का स्वास्थ्य, पर्यावरणीय प्रभाव

और वाइन बनाने के लिए अंगूरों की गुणवत्ता पर गौर किया जाएगा। इसमें यह भी देखा जाएगा कि उत्पादक, नियामक और उपभोक्ता इन किस्मों को किस नजरिए से देखते हैं—यह ऐसा मुद्दा है जिसका असर इनके बाजार में जगह बना पाने पर पड़ सकता है।

यह पहल दक्षिणी यूरोप के अंगूर के बागों के सामने मौजूद एक बड़ी समस्या पर केंद्रित है। उत्पादकों पर जलवायु परिवर्तन के अनुरूप ढलने के साथ-साथ फसल-सुरक्षा उत्पादों का इस्तेमाल घटाने का दबाव है। डाउनी मिल्ड्यू और पाउडरी मिल्ड्यू अब भी अंगूर के बागों के लिए मुख्य खतरों में शामिल हैं और मौसम की स्थितियों में बदलाव के साथ इनका प्रसार भी बदल सकता है। इसी बीच, यूरोपीय संघ ने अपनी Farm to Fork रणनीति के तहत 2030 तक कीटनाशकों के इस्तेमाल और उनसे जुड़े जोखिम को 50% घटाने का लक्ष्य रखा है।

परियोजना के बारे में जारी जानकारी के अनुसार, रोग-प्रतिरोधी अंगूर की किस्में पौध-सुरक्षा उपचारों की जरूरत 70% तक घटा सकती हैं। TRANSFERES से जुड़े शोधकर्ता यह अध्ययन करेंगे कि अलग-अलग स्थानीय परिस्थितियों—जैसे जलवायु, मिट्टी और उत्पादन प्रणालियों में अंतर—में भी यह लाभ कायम रहता है या नहीं। यह अहम है, क्योंकि एक क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्म दूसरे क्षेत्र में कृषि या व्यावसायिक स्तर पर उतने ही अच्छे नतीजे दे, यह जरूरी नहीं।

Neiker के पौध उत्पादन एवं संरक्षण विभाग की शोधकर्ता और परियोजना समन्वयक Ana Díez ने कहा कि इन किस्मों को उत्पादन प्रणालियों में बड़े पैमाने पर शामिल करने से पहले यह समझना जरूरी है कि भाग लेने वाले क्षेत्रों की अलग-अलग जलवायु और मिट्टी में उनका व्यवहार कैसा रहता है। उनके मुताबिक, इससे उत्पादकों को उनकी उपयुक्तता का आकलन करने में मदद मिलेगी और खेतों में इन्हें अपनाने को बढ़ावा मिलेगा।

परियोजना में उन्नत किस्मों के साथ-साथ उन पारंपरिक किस्मों का भी अध्ययन होगा जिनका व्यापक इस्तेमाल नहीं होता। उद्देश्य सिर्फ फफूंदजनित रोगों के प्रति प्रतिरोध का आकलन करना नहीं है, बल्कि यह भी देखना है कि प्रतिरोधी पौध सामग्री को पारंपरिक भूमध्यसागरीय अंगूर किस्मों के साथ मिलाकर क्या सूखा सहने की बेहतर क्षमता वाली पौध सामग्री तैयार की जा सकती है। वाइन उत्पादकों के लिए आगे चलकर इसका मतलब ऐसी बेलों की उपलब्धता हो सकता है जिन्हें कम उपचारों की जरूरत हो और जो वाइन की गुणवत्ता से समझौता किए बिना पानी की कमी का बेहतर सामना कर सकें। अंगूर की आपूर्ति और वाइन उत्पादन पर आधारित पेय उद्योग के लिए यह सीधे तौर पर अहम है।

शोधकर्ता यह मापेंगे कि बेलें पर्यावरणीय तनाव के अलग-अलग रूपों पर कैसी प्रतिक्रिया देती हैं और अंगूरों की वाइन-निर्माण गुणवत्ता का आकलन करेंगे। नई पौध सामग्री मौजूदा शैलियों, मूल-क्षेत्र के नियमों और उपभोक्ताओं की अपेक्षाओं के अनुरूप है या नहीं, यह तय करने वाले वाइन उत्पादकों के लिए यह अहम मुद्दा है। परियोजना के समर्थकों का कहना है कि वाइन की गुणवत्ता उन निर्णायक कारकों में होगी जिनसे तय होगा कि इन किस्मों को अलग-अलग वाइन क्षेत्रों और बाजार में जगह मिल सकती है या नहीं।

इस परियोजना की सीमा-पार संरचना इसकी मुख्य विशेषताओं में से एक है। फ्रांस को प्रतिरोधी अंगूर की किस्मों के साथ काम करने का अधिक अनुभव है और वहां इनमें से कुछ किस्में पहले से व्यावसायिक वाइन उत्पादन में इस्तेमाल हो रही हैं। उम्मीद है कि इस अनुभव से स्पेन के प्रतिभागियों को न केवल तकनीकी प्रदर्शन, बल्कि ऐसी किस्मों को लगाने और उनका विपणन करने से जुड़े नियामकीय और व्यावहारिक पहलुओं को भी बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। वहीं, स्पेन में अलग जलवायु और मिट्टी की स्थितियों में किए जा रहे परीक्षणों से फ्रांसीसी साझेदारों को यह जानने में मदद मिलने की उम्मीद है कि बेलें अन्य उत्पादन परिवेशों के अनुरूप कैसे ढलती हैं।

खेतों में परीक्षणों के अलावा, TRANSFERES में नतीजों को वाइन क्षेत्र तक पहुंचाने के लिए व्यापक प्रयास भी शामिल हैं। परियोजना के तहत नियामकों, उत्पादकों और तकनीकी कर्मचारियों के लिए प्रदर्शन कार्यक्रम, सीमा-पार बैठकें और सूचना सत्र आयोजित किए जाएंगे। इसके अलावा, तकनीकी दस्तावेज, प्रकाशन और जनसंपर्क सामग्री तैयार करने की योजना है। मूल-क्षेत्र निकायों, सहकारी संस्थाओं, वाइन उत्पादकों और अनुसंधान संगठनों के साथ भी काम किया

जाएगा, ताकि परियोजना समाप्त होने के बाद भी इसके निष्कर्ष उपयोगी बने रहें।

परियोजना में इन अंगूर की किस्मों के प्रति लोगों की धारणा का भी अध्ययन किया जाएगा। यह अहम साबित हो सकता है, क्योंकि व्यावसायिक स्तर पर इन्हें अपनाना सिर्फ प्रतिरोध और उपज पर निर्भर नहीं करता। वाइन उत्पादकों को यह जानना होगा कि खरीदार अपरिचित या नई विकसित अंगूर किस्मों से बनी वाइन स्वीकार करेंगे या नहीं। उत्पादकों को यह भी जानना होगा कि ये किस्में स्थानीय उत्पादन नियमों और बाजार में उत्पाद की स्थिति के अनुरूप बैठती हैं या नहीं।

अगर नतीजे अनुकूल रहे, तो वाइन कारोबार पर इस काम का व्यापक असर पड़ सकता है। फफूंदनाशक उपचारों पर निर्भरता घटने से अंगूर के बागों की लागत और पर्यावरण पर दबाव कम हो सकता है, जबकि सूखा सहने की बेहतर क्षमता गर्म और शुष्क मौसम में अंगूर उत्पादन को स्थिर रखने में मदद कर सकती है। ऐसे क्षेत्र में जहां कच्चे माल की गुणवत्ता और निरंतर उपलब्धता वाइन तथा उससे जुड़े पेय पदार्थों के उत्पादन के लिए अहम हैं, किसी भी नई किस्म के लिए मजबूती और वाइन-निर्माण प्रदर्शन का मेल निर्णायक कसौटी साबित हो सकता है।